JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यास–एक सर्वेक्षण

(डॉ.राजू सी.पी, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सेंट अलोष्यस कालेज, तृश्शूर, केरल–680611)

भैरवप्रसाद गुप्त हिन्दी साहित्य के प्रगतिवादी आंदोलन की अंतिम कड़ी थे, जिसकी जड़ें राहुल सांकृत्यायन और यशपाल ने रोपी थीं। नागार्जुन, रंगेय राघव और अमृत राय इसी आंदोलन से फूटी शाखाएँ थीं। एक लेखक के रूप में गुप्तजी ने प्रेचन्द की तरह ही शहर और गाँव दोनों को ही अपनी रचना का केन्द्र रखा। उनके उपन्यासों में समाज के अनेक पक्षों, समस्याओं और स्थितियों का चित्रण मिलता है। परन्तु उनका ध्यान मुख्यतः उत्तर भारत के समाज में केन्द्रित था। गुप्तजी के निधन से हिन्दी में प्रगतिवादी आन्दोलन की वह अन्तिम कड़ी टूट गई है, जिसके विकास के लिए वे अपने सन् 1946 के **शोले** उपन्यास से लेकर उनके मरणोपरान्त सन् 1997 में प्रकाशित **छोटी सी शुरुआत** तक निरंतर सक्रिय रहे।

समसामयिक परिस्थितियाँ और साहित्यकार के व्यक्तित्व उनके विचार–धारा में प्रभाव डालता है। साहित्यकार अपने समय के समाज में रहकर साहित्य की रचना करता है। जिसके माध्यम से हमें उनके समय के समाज का स्वरूप दृष्टिगत होता है। इसलिए आज के समाज का स्वरूप जानने के लिए साहित्यकार की प्रेरक परिस्थितियों का अध्ययन करना आवश्यक है। साहित्य पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख परिस्थितियाँ, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक है। समसामयिक परिस्थितियों के अध्ययन से गुप्तजी के समय की समाज का परिचय मिलता है। उससे तुलना करके आज समाज में आये परिवर्तन को हम देख सकते हैं। अतः समसामयिक परिस्थितियाँ एवं साहित्यकार के व्यक्तित्व की जानकारी शोध–कार्य के लिए अनिवार्य है।

गुप्तजी के उपन्यासों का सर्वेक्षण करने के पश्चात् मुझे मालुम हुआ कि उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज बहु आयामी चित्र प्रस्तुत किया है। गुप्तजी बुनियावादी वर्गों, किसान और मज़दूर को अपनी रचना के केन्द्र में रखते हैं। **मशाल, गंगा मैया, सती मैया का चौरा** और **धरती** उपन्यास इस दृष्टि से उनके महत्वपूर्ण उपन्यास है। दूसरी ओर वे क्रान्ति में मध्यवर्ग की भूमिका को भी उचित महत्व देते हैं। **अन्तिम अध्याय, नौजवान, भाग्य देवता** आदि उपन्यास इसका उदाहरण है। गुप्तजी के सभी उपन्यासों में नारी शोषण एवं नारी चेतना का चित्रण देख सकते हैं। **अक्षरों के आगे मास्टरजी** उपन्यास में शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। उनके मरणोपरान्त प्रकाशित **छोटी सी शुरुआत** उपन्यास पढ़ने से एसा महसूस हुआ कि यह उपन्यास **सती मैया का चौरा उपन्यास** के दूसरी भाग है। गुप्तजी ने अपने उपन्यासों में समाज के आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र पर तूलिका चलाई है।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत समाज के परिवार, विवाह, दहेज, नारी जीवन, शिक्षा, छुआछुत आदि विवध पहलुओं को उजागर किया है। पारिवारिक जीवन में आज अधिकाधिक घुटन और तनाव दिखाई देती है। पति–पत्नी तथा परिवार के अन्य सदस्यों में स्वार्थ, ईष्या, अहंभाव, शिक्षा आदि से नाजुक और पवित्र रिश्ते टूटने लगे हैं। फलस्वरूप समाज में परिवारों का विघटन देखने को मिलता है। गुप्तजी अपने जीवन का अधिक समय संयुक्त परिवार में व्यतीत करने के कारण उनके उपन्यासों में संयुक्त परिवार का चित्रण अधिक मात्रा में मिलता है। लेकिन आज समाज में व्यष्टि परिवारों की संख्या अधिक दिखाई देती है। भारतीय समाज में प्रेम और विवाह की परंपरागत अवधारणा पर परिवर्तन करना चाहते हैं। **छोटी सी शुरुआत** उपन्यास में सादिक अली साहब के माध्यम से गुप्तजी कहते हैं–" हमें प्रेम और विवाह के संबन्ध में अपने दृष्टिकोण और व्यवहार को बदलना चाहिए। इनके संबन्ध में पुराने दृष्टिकोण और व्यवहारों से युवाओं को मुक्त कर उन्हें छूट देनी चाहिए कि वे जिससे और जैसे चाहें प्रेम करें, विवाह या गृहस्थी के बन्धन में बंधने की कोई ज़रूरत नहीं, एक साथ, एक जगह रहने की कोई बाध्यता नहीं। वे अपने–अपने काम की जगह रहें और अवकाश का समय एक साथ बिताएँ"। गुप्तजी के यह विचार भारतीय वैवाहिक जीवन के लिए बडी चुनौती है। यह भारतीय समाज की नींव हिला सकती है। नारी शोषण पर गुपतजी ने अपनी वेदना दिखाई है, शोषण से मुक्त कराने केलिए शिक्षा एवं नारी चेतना पर अधिक बल दिया है। **अक्षरों के आगे मास्टरजी** उपन्यास में मास्टरजी के माध्यम से गुप्तजी कहते हैं–" दुर्गा तथा काली नारी के शक्ति रूप की प्रतीक है। मेरी तो कामना है कि प्रत्येक नारी को आवश्यकता पड़ने पर इस शक्ति रूप का परिचय देना चाहिए। बिना इसके वह पुरुष प्रमुख समाज में सम्मान पूर्वक नहीं रह सकती"। समाज में अशिक्षा की महत्वपूर्ण समस्या है। इसलिए शिक्षा के महत्व पर ध्यान देकर उसके प्रति लोगों में जागरण का प्रयास गुप्तजी ने किया है। समाज में पाये जाने वाले जाति व्यवस्था एवं छुआछूत का चित्रण भी उपन्यासों में देखने को मिलता है।

भारतीय समाज अर्थ–प्रधान समाज बन गया है। वर्तमान समाज में अमीर और अमीर बनता जा रहा है, तो गरीब और गरीब बनता जा रहा है। इस असंतुलितावस्था के कारण समाज का आर्थिक संतुलन नष्ट हो गया है। रोजी–रोटी की तलाश में मुसीबतों को झेलते हुए, भूखे तड़पते गरीब किसान, मज़दूर एवं उनके परिवारवालों के क्रंदन, उनकी सिसकियों को गुप्तजी ने अपने उपन्यास में व्यक्त की है। **सेवाश्रम** उपन्यास में अकाल का नग्न चित्रण देख सकता है। उपन्यास में रंभा कहती है–" विद्यालय के मैदान में कुछ मर्द–औरत की भीड़ लगी हुई है, आभा देवी ज़ोर ज़ोर से उन्हें डाँटकर बाहर जाने को कह रही है और वे लोग आभा देवी के सामने हाथ फैला–फैलाकर, गिडगिडा–गिडगिडाकर कुछ माँ रहे हैं। मैं सहज जिज्ञासावश उनके पास चली गयी। भीड में एक–दूसरे से गूँथे हुए कंकाल स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों को सूखे हाथ उठाये और दाँत चियारे खाने को कुछ माँगते देखकर मेरी तो आत्मा काँप उठी"। समाज में निर्माण होने वाली गरीबी, बेरोज़गारी, शहरीकरण तथा शोषण का यथार्थ चित्रण किया है। किसान और मज़दूरों से अन्याय एवं अत्याचार दिखानेवाले जमींदार, महाजन, पूँजीपति आदि के चित्रण एवं उनके शोषण से ग्रस्त समाज के वर्ग संघर्ष का चित्रण मार्मिक है। **गंगा मैया, मशाल, धरती, जंजीरें और नया आदमी, सती मैया का चौरा, भाग्य देवता** आदि उपन्यास इसका सपूत है। समाज में एक तरफ लोगों में विषमता है, तो दूसरी तरफ अर्थ के कारण सामाजिक व्यवस्था अस्त–व्यस्त दिखाई पड़ती है। **अक्षरों के आगे मास्टरजी** उपन्यास में मास्टर साहब के माध्यम से गुप्तजी कहते हैं–" अर्थ–प्रधान समाज व्यवस्था में एसा ही होता है। मनुष्य–मनुष्य के बीच के सारे संबन्ध, समाज की सारी नैतिकता, मनुष्य के सारे बहुमूल्य गुण, प्रेम, मित्रता, भाईचारगी, क्षमा, सचाई, नम्रता, सहिष्णुता, सहानुभूति, संवेदना, दया, ममता सब कुछ अर्थ–धन की आग में स्वाहा हो जाते हैं"।

भारतीय समाज आज राजनीति से बहुत जुडा हुआ है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको किसी न किसी राजनीतिक दल से अवश्य जुडना महसूस करने लगा है। गुप्तजी के उपन्यासों में देश की राजनीति का यथार्थ चित्रण दृष्टिगत है। धर्म के नाम पर फायदा उठाने वाले राजनीतिक नेताओं का, नोताओं एवं प्रशासनिक अफसरों के भ्रष्टाचार का, नीति–न्याय व्यवस्था में चल रहे अन्याय का, शिक्षा संस्थाओं में हो रहे राजनीति का, छात्र–राजनीति आदि का वास्तविक चित्रण उपन्यासों में अंकित है।

देश में धर्म और संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए उपन्यासों में धर्म और संस्कृति का आदर्श तत्वों, सिद्धातों एवं मुल्यों को देखने को मिलता है। ईश्वर के अस्तित्व की अवधारणा से लेकर धार्मिक अंधविश्वास तक गुप्तजी ने अपने उपन्यासों में चित्रण किया है। वास्तव में सांप्रदायिकता ने पहले से चले आ रहे धर्म के पवित्र रूप को बहुत विकृत और कुत्सित कर दिया है। जिसके कारण धर्म के प्रति लोगों के मन में विश्वास की भावना पैदा होती है। **सती मैया का चौरा** उपन्यास का मन्ने सांप्रदायिकता का अंत वर्ग चेतना मानता है–" सांप्रदायिकता का इलाज केवल वर्ग चेतना है! उपदेश नहीं, सुधार नहीं, धर्मों का समन्वय नहीं"।

आज का धर्म बदल गया है। वह परंपरागत धर्म जो अलौकिक तत्व के अस्तित्व पर आधारित था, आज की बदलती हुई परिस्थितियों में उसे एक मानवीय आधार प्राप्त हो रहा है। वर्तमान स्थिति में धर्म की रूढ़िगत मान्यताओं को आज अंधविश्वास कहकर नकारा जा रहा है। आज के युवा मानस के परंपरागत धर्म के प्रति अनास्था की भावना प्रबल होती जा रही है। भारतीय संस्कृति के वेश–भूषा, खान–पान, नैतिक मूल्य, वैवाहिक संस्कार भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का आक्रमण, उससे उत्पन्न समाज के नैतिक मूल्यों का ह्रास आदि का चित्रण गुप्तजी के उपन्यासों में दर्शनीय है। भैरवप्रसाद गुप्त आज हमारे बीच नहीं है, फिर भी उनके उपन्यासों द्वारा वे आज भी भारतीय समाज में जीवित हैं।

संदर्भ

01. छोटी सी शुरुआत पृष्ठ सं 474–475

02. अक्षरों के आगे मास्टरजी पृष्ठ सं 34

03. सेवाश्रम पृष्ठ सं 36

04. अक्षरों के आगे मास्टरजी पृष्ठ सं 45

05. सती मैया का चौरा पृष्ठ सं 414